स्वदेश भोपाल (सोमवार), 27 सितंबर 2010

टाइम मशीन है मानव शरीर

भोपाल: क्या आप जानते हैं, कि व्यक्ति के शरीर की उंगलियां ईश्वर का एक ऐसा कंप्यूटर है जिसमें उसके जीवन से लेकर मरण तक के उतार-चढ़ावों का डाटा स्टोर है। जिसकी डीकोडिंग कर व्यक्ति के भविष्य के बारे में जाना जा सकता है। इतना ही नहीं निश्चितता के सिद्धांत के जरिये दो वर्ष पूर्व भूकंप, बाढ़, बांधों के टूटने, फ्लड, सुनामी, रेल दुर्घटना वायुयान दुर्घटना और आतंकवादी ब्लास्ट के बारे में वैज्ञानिक भविष्यवाणी की जा सकती है। यह दावा किया है वैज्ञानिक चौके सोनकिया ने। एक पत्रकार वार्ता आयोजित कर श्री सोनकिया ने अपने इस सिद्धांत के बारे में विस्तार से बताया। अपनी पहली पुस्तक सोर्टिंग इज बिलिविंग फर्स्ट टाइम इन वर्ल्ड में उन्होंने निश्चितता के सिद्धांत के बारे में लिखा है। उन्होंने बताया कि मानव शरीर प्रकृति या ईश्वर का कंप्यूटर है, जिसमें लाइनों के रूप में भविष्य की सभी दुर्घटना का स्पष्ट लेखा-जोखा है। यह लेखा-जोखा शरीर के बायोमैट्रिक भाग में स्थित है जिसे वैज्ञानिक बायोकंप्यूटर या डर्मेटोग्लाइफिक्स कहते हैं। जिसे गोपनीय भाषा द्वारा डि-कोड किया जा सकता है।

- उतार-चढ़ाव का डाटा स्टोर
- डीकोडिंग के जरिये पद्धति की खोज
- अनिश्चितता का सिद्धांत गलत
- प्राकृतिक आपदा की भविष्यवाणी संभव

पाठ्यक्रम से हटाया जाए अनिश्चितता का सिद्धांत

1926 में जर्मन वैज्ञानिक वर्नर हाइजेनबर्ग ने अनिश्चितता के सिद्धांत का निरूपण किया। जिसे पूरे विश्व में मान्य किया गया और आज यह पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है। इस सिद्धांत के अनुसार स्थिति और गति को एक साथ नहीं मापा जा सकता इसी के कारण वर्तमान में विज्ञान में किसी भी दुर्घटना की भविष्यवाणी नामुमकिन है। लेकिन श्री सोनकिया का दावा है कि यह सिद्धांत पूर्णतः गलत है जिसे पाठ्यक्रम से निकाल देना चाहिये। उन्होंने कहा कि ब्रह्माण्ड की परिशुद्धताओं को मापा जा सकता है। उनका यह सिद्धांत एमसीआई, गुवाहाटी 2004, आई आई टी रुड़की 2005, इंडियन जियो फिजिकल यूनियन भोपाल 2005 में आयोजित